ब्राह्मण जागें साधु चेतें

-श्रीराम शर्मा आचार्य

ब्राह्मण जागें-साधु चेतें

ब्राह्मण को शास्त्रों में —'भू-सुर' कहा गया है। भूसुर का अर्थ है—पृथ्वी का देवता। एक देवता वे होते हैं, जो स्वर्ग में रहते हैं और अदृश्य रूप से मनुष्यों की सेवा-सहायता करते हैं। उनका कृपा-पात्र बनने के लिए लोग तरह-तरह के पूजा-उपचार करते हैं ताकि देवता प्रसन्न एवं परितुष्ट रहें और अपने अनुग्रह की वर्षा इस धरती के लोगों पर करते रहें। लगभग ऐसी ही स्थिति भूसुरों की भी है, इन पृथ्वी के देवता, ब्राह्मणों की समुचित पूजा हिंदू समाज में होती है। उन्हें अन्य वर्णों से ऊँचा माना जाता है। कम आयु के ब्राह्मण को भी बड़ी आयु के अन्य लोग प्रणाम करते हैं। यह इसलिए किया जाता है कि अंतरिक्ष में रहने वाले अदृश्य देवताओं की तरह यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले, भू-लोक वासी ब्राह्मण देवता भी हमारी श्रद्धा, भावना, दान-दक्षिणा आदि से परितुष्ट होकर हमारे कल्याण का आयोजन करेंगे।

समाज-पुरुष का शीर्ष-ब्राह्मण—ब्राह्मणों का स्वरूप ही ऐसा है। शास्त्रों में उनके कर्त्तव्य ऐसे कठोर बताए गए हैं जिनका पालन करने वाले को देवता ही कहना पड़ेगा। जो ब्राह्मण की कसौटी पर खरा उतरता है, उसे देवता नहीं तो और क्या कहेंगे? आस्तिकता के महान आदर्शों के प्रति निष्ठावान बने रहने के लिए भावनापूर्ण ईश्वर उपासना, व्यक्तित्व को उत्कृष्ट स्तर का बनाने के लिए आत्म-निर्माण की कठोर जीवन साधना और जनमानस में सत्प्रवृत्तियाँ विकसित करने के लिए अनवरत-श्रम, यह तीन कार्यक्रम जिन्होंने अपने लिए निर्धारित कर लिए हैं और जो इसी राजमार्ग पर निरंतर चलते रहकर अपना ही नहीं समस्त संसार का कल्याण करते हैं, उनके चरणों पर सभी का मस्तिष्क झुक जाना स्वाभाविक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त मंत्रों में समाज के स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए ब्राह्मण को 'मुख' की उपमा दी है। यह बड़ी सार्थक उपमा है। मुख अर्थात शिर, उसी में मस्तिष्क, जीव, नाक, कान, आँख, वाणी, रसना आदि महत्त्वपूर्ण अवयव रहते हैं। जीवन की स्थिरता, प्रसन्नता एवं प्रगति का तीन-चौथाई आधार उस कंठ से ऊपर वाले भाग पर ही निर्भर रहता है। मस्तिष्क की प्रखरता, बुद्धि, विचारधारा, तर्क विवेचना, सूझ-बूझ आदि पर ही सारे शरीर को सुख-दुःख, सम्मान-अपमान का अवसर मिलता है। दिमाग पागल, सनकी, मूढ़, विकृत बन जाए, उलटी बातें सोचे, आशंकाएँ भरी रहें, पग-पग पर सनकता रहे तो ऐसा व्यक्ति हर जगह तिरस्कृत होगा और शरीर के अन्य अंगों की भी भोजन, वस्त्र जैसी आवश्यकताओं को यथावत प्राप्त करना कठिन हो जाएगा। ब्राह्मण की विचारणा यदि उलटी हो जाए तो उसका कष्ट सारे समाज को भोगना पड़ेगा। पागल आदमी के किस अंग को क्या सुख मिलता है? समाज के मानसिक नेतृत्व की जिम्मेदारी अपने कंधे पर उठाने वाला ब्राह्मण वर्ग यदि अपने कर्त्तव्यों से विचलित होने लगा तो उसका परिणाम ब्राह्मणत्व का ही नहीं, सारे समाज का भी पतन होगा।

ब्राह्मण मस्तिष्क ही नहीं समाज की आँख भी है। वह दूरदर्शितापूर्वक, सूक्ष्म दृष्टि से बारीकी के साथ यह देखता रहता है कि मेरी निज की विचारधारा, भावना, आकांक्षा, कार्य-पद्धति एवं आदर्शवादिता में कहीं कोइ त्रुटि तो नहीं आ गई है, यदि कोई छिद्र दिखाई पड़ता है, तो वह उसे बंद करने के लिए प्रयास में जुट जाता है। चरित्र ही तो ब्राह्मण का धन है। उसमें दोष आ गया तो फिर उसके पास बचा ही क्या? इसी प्रकार वह समाज-पुरुष को भी अपनी ही आत्मा का परिधान मानता है और यह भी देखता है कि मानव समाज में कहीं चारित्रिक, मानसिक, भावनात्मक दोष-दुर्गुण तो पैदा नहीं हो रहे हैं। स्वच्छ एवं सभ्य समाज के लिए ब्राह्मण को प्रहरी की तरह प्रयत्नशील रहना पड़ता है। जहाँ जो त्रुटियाँ दिखाई पड़ती हैं, उन्हें सुधारने के लिए वह सारी सामर्थ्य लगा देता है। ऐसा उसे करना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होगा। नेत्रों का काम ही यह है कि वस्तुस्थिति को सावधानी से देखे और जहाँ जो अव्यवस्था दीखे उसे ठीक कराने की व्यवस्था के लिए उपयुक्त अंगों को प्रेरणा दे। ब्राह्मण को भी बस यही तो करना होता है। इसीलिए तो उसे मुख कहा गया है।

मुख के भीतर जिह्वा रहती है जिसे दो काम करने पड़ते हैं—एक भोजन नियमन, दूसरा वाणी उच्चारण यह दोनों कार्य पिछले कार्यों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। क्या भक्ष्य है, क्या अभक्ष्य, क्या ग्राह्य है, क्या अग्राह्य है उसका निर्गय जिह्वा को करना पड़ता है। जो उपयुक्त होता है उसे ही वह भीतर जाने देती है अन्यथा चखकर ही वापस लौटा देती है। कडुए, विषैले, दुर्गंधित पदार्थ वह भीतर नहीं जाने देती। इसी प्रकार ब्राह्मण-समाज शरीर में अवांछनीय तत्त्वों को घुसने नहीं देता। वह पूरी-पूरी चौकीदार करता है कि कोई विषैली दुष्प्रवृत्तियों का अभक्ष्य कहीं जन-साधारण के मन-शरीर में प्रवेश न कर जाए, उसकी सुरक्षा ब्राह्मण को रखनी ही पड़ती है।

मुख जो पाता है उसे वह अपने पास नहीं रखता, वरन पीस-कूटकर रसायन बनाता है और पेट में भेज देता है। ताकि उसका रस-रक्त बनकर सारे शरीर का पोषण हो। ब्राह्मण अपरिग्रही होता है, लोग उसे खूब दान-दक्षिणा देते हैं, स्वयं अपनी योग्यता एवं प्रतिभा से भी कमा सकता है, पर उस उपार्जन में से शरीर निर्वाह मात्र के लिए लेकर शेष सारा किसी न किसी रूप में समाज को लौटा देता है। उसकी सारी कमाई का लाभ समाज उठाता है। मुख को स्वादिष्ट पदार्थ दिए जाते हैं, वह उन्हें लेता भी है, पर इस हाथ ले उस हाथ देने वाली नीति से तुरंत ही वह उसे समाज को लाभान्वित करने की योजना बना लेता है। जो कण दाँतों में उलझे रह जाते हैं उन्हें भी वह कुल्ला करके बाहर निकाल देता है, ब्राह्मण को मुख की तरह अपरिग्रही होना ही चाहिए।

जिह्वा दूसरा काम करती है—बोलने का। मधुर बोलना, श्रेयस्कर बोलना, सीमित बोलना, वाणी की विभूतियाँ हैं। ये विभूतियाँ जिसकी जिह्वा में हैं वे अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं, अपने लिए व्यक्तिगत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन की प्रगति का अनेक दिशाओं से पथ-प्रशस्त होता है। इतना ही नहीं जब दूसरों को उनके कल्याण का परामर्श सन्मार्ग की ओर चलने का मार्ग दर्शन एवं प्रगति के लिए प्रोत्साहन देने का क्रम बना लिया जाता है तो उसका परिणाम समस्त समाज के लिए शुभ होता है। संसार की जितनी सेवा जिह्वा द्वारा हो सकती है, उतनी और किसी प्रकार नहीं, इसलिए ब्राह्मण अपना सेवा-धर्म वाणी द्वारा ही निबाहता है। कथा, प्रवचन, सत्संग, परामर्श, विचार-विनिमय जैसे कार्यक्रम उसके चलते ही रहते हैं। फलस्वरूप समय-समय पर अगणित लोगों को वह प्रकाश मिलता रहता है, जिसके आधार पर वे अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकें। यह सेवा का उच्चतम स्वरूप है। आज 'प्रेस युग' चल पड़ने से वह प्रवचन कार्य एक सीमा तक लेखनी द्वारा भी होने लगा है।

उपयुक्त आधार पर ब्राह्मण की तुलना मुख से ठीक ही की गई है। वह समाज का शीर्ष है। शिर ठीक रहेगा तो सब कुछ ठीक हो जाएगा, बिगड़ी बात भी बन जाएगी, पर यदि शिर ने अपना काम करना छोड़ दिया तो बनी बात को बिगड़ने में देर न लगेगी। जिस व्यक्ति ने समाज रूपी शरीर में अपना स्थान एवं कर्त्तव्य शिर के अनुरूप चुना है, उसकी जितनी महिमा गाई जाए उतनी ही कम है, जितनी उपयोगिता मानी जाए उतनी ही कम है। इसी आधार पर उसे 'भू-सुर' कहा जाता है। ब्राह्मण निश्चित रूप से पृथ्वी का देवता है। देवता उन्हें ही कहते हैं जो देते रहते हैं। जो दे वह देवता कहा जाता है। चूँकि ब्राह्मण का जीवन क्रम परमार्थ से ही ओत-प्रोत है, अतएव उसे देवता कहना सर्वथा सार्थक है। देवताओं की पूजा होनी चाहिए। उन्हें प्रणाम, अभिवंदन एंव भेंट-पूजा से सम्मानित किया ही जाना चाहिए। ब्राह्मण का ऐसा ही सम्मान किया भी जाता है।

ब्राह्मण और ब्राह्मणत्व—वेद भगवान ने मनुष्य को ब्राह्मण बनने की, ब्राह्मणत्व अपनाने की प्रेरणा दी है और कहा है—

मर्त्या हवा अग्ने देवा आसुः। अर्थात-शुभ कर्म करो और इसी शरीर से भू-सुर का पद प्राप्त करो। '**आर्यावता विसृजन्तो अधिक्षमि**'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थात वे प्रत्यक्ष देवता हैं जो धर्म प्रेरणा को सजीव रखने के लिए मर मिटते हैं।

अग्निऋषिः पावमानः पाञ्चजन्य पुरोहितः। अर्थात पुरोहित की पवित्र जिम्मेदारी केवल वे लोग उठावें, जिनमें आवश्यक गुण हों।

तमेव ऋषिं तमु ब्रह्मणसाहुर्यज्ञन्य सामगा। अर्थात वही ऋषि और वही ब्राह्मण है जो ज्ञान से दूसरों को सन्मार्ग पर लगाता रहता है।

परातत सिंच्यते राष्टं ब्रह्मणे यत्र जीयते। अर्थात जहाँ ब्राह्मण हारते हैं, वह देश खोखला हो जाता है।

ब्राह्मणं यत्र हिंसन्ति तद् राष्टं दुन्दुना। अर्थात–जहाँ ब्राह्मण की उपेक्षा होती है, वह राष्ट्र दुख पाता है।

न ब्राह्मणस्य गां जगध्वा राष्ट्रं जागार कश्चन। अर्थात जहाँ ब्राह्मण का तिरस्कार होता है वहाँ से सुख–शांति चली जाती है।

देव उन्नयथा पुनः। अर्थात हे ब्राह्मणो! गिरे हुओं को फिर उठाओ।

प्रियं अतिथिं गृणीषणि। अर्थात हे सम्मान योग्य ब्राह्मणो, घूम–घूमकर धर्मोपदेश करते रहो।

इस प्रकार के अभिवचन शास्त्र में पग–पग पर भरे पड़े हैं, जिनमें ब्राह्मण के कर्त्तव्य, गौरव, महत्त्व एवं सम्मान का निर्देश किया गया है। देवता की अभ्यर्थना होनी भी चाहिए। जिसका चरित्र पवित्र है, आदर्श उत्कृष्ट है और कर्म में सेवा–धर्म ओत–प्रोत है, उस देवता के प्रति समुचित श्रद्धा प्रकट की ही जानी चाहिए। उसमें त्रुटि करना अनुचित है। जो ब्राह्मण का मूल्य महत्त्व नहीं समझते वे दुःख दारिद्रय के भागी बनते हैं, इसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं है। इसी संदर्भ में ब्राह्मण के गुण, कर्म, स्वभाव का भी समुचित निर्देश किया गया है, इन गुणों के कारण ही उनको मान एवं गौरव मिला है। यदि वे न रहें तो फिर उसका मूल्य ही क्या रह जाता है।

ब्राह्मण की प्रथम प्रतिज्ञा–'वयं राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिताः' अर्थात हम ब्राह्मण राष्ट्र को जीवित एवं जागृत रखेंगे। अपने समाज में नव जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का संचार करते रहना एवं उसे कर्त्तव्य, धर्म अपनाए रहने के लिए जागृत रखना ब्राह्मण की परम पवित्र जिम्मेदारी है। उस जिम्मेदारी को पूर्ण तत्परता एवं सावधानी से निबाहते रहना ही ब्राह्मण धर्म है। ब्राह्मण वस्तुतः समाज का सच्चा नेता है, क्योंकि उसी के द्वारा जनमानस को पथ-भ्रष्ट होने से बचाया जा सकता है।

कठिन कर्त्तव्य और महान उत्तरदायित्व—अपने पद के अनुरूप ब्राह्मण का कर्त्तव्य ही कठिन एवं महान है। उसे सबसे पहले अपने को कसना पड़ता है, अपने दोष, दुर्गुणों से लड़ना पड़ता है, मनन एवं चिंतन द्वारा अपनी वासना एवं तृष्णा को परास्त करना पड़ता है, संयम की कसौटी पर निरंतर कसते रहना पड़ता है। यह इसलिए आवश्यक है कि दूसरे लोगों की तुलना में अपना चरित्र एवं व्यक्तित्व ऊँचा न हो तो फिर मार्ग-दर्शन की प्रक्रिया ही लड़खड़ा जाएगी। वक्ता को सुनने वालों की अपेक्षा कुछ ऊँचे स्थान पर बैठना पड़ता है, तभी वे उसका चेहरा देख पाते और प्रवचन सुन पाते हैं। यदि वक्ता श्रोताओं की पंक्ति में ही जा बैठे अथवा उनसे भी नीचे बैठ जाए और फिर प्रवचन करे तो सुनने वाले न तो उसका चेहरा देख पावेंगे और न आवाज ही ठीक तरह सुन पावेंगे। इसी प्रकार चरित्र की दृष्टि से दूसरों से ऊँचा न हो तो उसकी जन-नेतृत्व कार्य-पद्धति ही निरर्थक हो जाएगी।

भारतीय जनता कृतघ्न नहीं है। उसने ब्राह्मणों द्वारा की जाने वाली समाज की सेवा की उपयोगिता एवं महत्ता को समझा है और बदले के रूप में अधिक नहीं तो इतना तो किया है कि उन्हें उच्चतम सामाजिक सम्मान प्रदान करने के अतिरिक्त आजीविका की भी निर्बाध व्यवस्था कर दी है—वेतन के रूप में नहीं, सम्मानसिक्त श्रद्धा के रूप में। नियमित वेतन भी दिया जा सकता था, पर इसमें उनका सम्मान घटता। वे कर्मचारी स्तर पर आ जाते, इसलिए उनके गौरव के उपयुक्त यही था कि निर्वाह का प्रबंध भी हो जाए और सम्मान में कमी भी न आने पावे। हिंदू धर्म में पग-पग पर धर्मोत्सवों, व्रत-उद्यापनों, कथा-प्रवचनों संस्कार, त्योहारों, श्राद्ध, जन्मदिनों का विधान है। हर गृहस्थ को यह सब कई बार करना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होता है। सब में अन्न, वस्त्र, धन, फल आदि का दान होता है और उसके अधिकारी ब्राह्मण ही होते हैं। इससे हर छोटे ग्राम के पीछे चार, छः ब्राह्मण परिवारों का अभी भी भली प्रकार गुजारा होता है। जनता की यह गुण ग्राहकता, कृतज्ञता सब प्रकार सराहनीय है।

यह क्रम दोनों ओर से जब तक ठीक चलता रहा, तब तक समाज की सुव्यवस्था भली प्रकार चलती रही। ब्राह्मण, घर-घर जाकर अपने यजमानों को उपदेश करते थे, स्त्रियों, बच्चों, युवकों, युवतियों, वृद्धों सभी को उनके कर्त्तव्य समझाते थे। जो पथ-भ्रष्ट हो रहा होता था, उसे संभालते थे। जिस प्रकार स्वास्थ्य का बीमा करने वाली कंपनियों द्वारा नियुक्त 'फैमिली डाक्टर' अपने बीमादारों की स्वास्थ्य संबंधी पूछताछ और व्यवस्था स्वयं करते रहते हैं, उसी प्रकार पुरोहितों का कर्त्तव्य था कि अपने यजमानों में से कोई बाल-वृद्ध कुसंस्कारों वाला एवं कुमार्गगामी न बने। यजमानों के घरों से प्रत्येक सदस्य से वे अपना प्रगाढ़, आत्मीय संबंध बनाए रहते थे और उनका समुचित पथ-प्रदर्शन करते रहते थे। जहाँ सद्बुद्धि रहेगी, नीतिपूर्वक जीवन जीने की पद्धति अपनाई गई होगी, वहाँ सुख, समृद्धि की कमी क्यों रहेगी ? सारी जनता फलती-फूलती थी। पुरोहितों ने माली बनकर जिस बगीचे को बोया, सींचा, बढ़ाया, रखाया है, वह पत्र-पुष्पों से सुरक्षित और फलों से लदा हुआ क्योंन होगा ? यजमानों के घरों पर जाकर संस्कार पर्व आदि के अवसरों पर उद्बोद्धन और अपने घर-आश्रमों पर यजमानों के बालकों को पढ़ाने के लिए गुरुकुलों का संचालन यह ब्रह्मचर्य उनकी आत्मा को भी पूरा-पूरा संतोष देता था और सारी जनता इसे उनकी इसी सेवा-साधना का सत्परिणाम मानती थी।

अवनति और पतन का क्रम—धीरे-धीरे यह क्रम बदला। श्रम बदला। श्रम का स्थान आलस्य ने ले लिया, अधिक उपार्जन का लोभ उपजा, उत्कृष्ट व्यक्तित्व रखने की कष्ट-साध्य जीवन-साधना की उपेक्षा की जाने लगी, स्वाध्याय से मुँह मोड़ा गया और सेवा से आँखें चुराई जाने लगीं। जहाँ ब्राह्मण समाज की बहुमूल्य सेवा करते थे और बदले में निर्वाह की थोड़ी-सी सुविधा प्राप्त करते थे, अब अधिकाधिक दक्षिणा बटोरना तो याद रहा पर सेवा के कर्त्तव्य एक प्रकार से भुला ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिए गए। पहले अपनी विद्या, नम्रता, सेवा एवं सद्गुणों के कारण उन्हें सम्मान मिलता था, उससे संपन्न बनते थे, अब वंश को ही श्रेष्ठता का आधार मान लिया गया और ऐसा सोच लिया गया कि अमुक वंश में जन्मने के कारण हम सबसे श्रेष्ठ हैं और इस वंशगत श्रेष्ठता के कारण ही हमें वह अधिकार मिल गया है कि बिना लोक-सेवा के भी जन सम्मान एवं दान-दक्षिणा प्राप्त करते रहे सकें।

क्या यह आधार उचित है? क्या कोई बिना सेवा एवं श्रेष्ठता के भी सम्मानस्पद बन सकता है? क्या वंश के कारण किसी को उच्च माना जा सकता है? फिर कोई उच्च भी हो तो क्या उसे बिना समुचित प्रतिफल चुकाए किसी से दान आदि लेने का अधिकार है? इन प्रश्नों का उत्तर 'नहीं' हो सकता है।

हमारे पूर्वज ऋषि या ब्राह्मण थे, इसलिए हमें वैसा ही माना जाए, यह माँग सर्वथा हास्यापद है। किसी के पिता कलक्टर थे, किंतु वह स्वयं चपरासी है तो ऐसी दशा में उस चपरासी का दावा कैसे स्वीकार किया जाए कि वंश परंपरा के कारण उसे भी कलक्टर माना जाए। डॉक्टर का बेटा यदि अशिक्षित हो तो डॉक्टर मानकर चिकित्सा कराने के लिए कौन तैयार होगा? किसी संगीतज्ञ की संतान को यदि गाना, बजाना कुछ भी न आता हो, तो संगीत-सम्मेलन में उच्च पद कैसे मिलेगा? मूल्य गुणों का है वंश परंपरा का नहीं, इस सच्चाई इंकार नहीं किया जा सकता है। जब ब्राह्मण अपना कर्त्तव्य छोड़ते गए और सम्मान और दान के लिए लालायित रहे, ऐसी दशा में जन-साधारण की दृष्टि में उनका मूल्य घटना स्वाभाविक ही था। मूल्य घटने के साथ आजीविका भी घटेगी ही। भौतिक जीवन के उपकरणों में खरच बढ़ता है, दान-दक्षिणा पर निर्भर रहा जाए और अपना मूल्य गिरा लिया जाए तो खरच की पूर्ति में कमी पड़ेगी ही। इसकी पूर्ति कैसे हो, सिवाय अनुपयुक्त ढंग की आमदनी बढ़ाने के और किया भी क्या जाए?

पिछले दिनों भाग्यवाद, भविष्यवाणी, गृहवाद, देवपूजन से अमुक प्रकार की सिद्धियाँ, स्वल्प कर्मकांड से प्रचुर भौतिक लाभों की आशा, भूत-प्रेत, झाड़-फूँक, टमना-टोटका की बे-सिर-पैर की ऐसी भ्राँतियाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फैलाई गईं जिनमें सम्मान का अशोभनीय तालमेल बिठाकर आमदनी की तरकीबें गढ़ी गईं। इससे ब्राह्मण की थोड़ी-बहुत आमदनी बढ़ी भी हो, पर उसका स्तर और भी गिरा। विचारशील लोगों से वस्तुस्थिति छिपी नहीं रहती, वे वास्तविकता को ताड़ जाते हैं। अज्ञानी लोग भले ही बहके रहें, पर विचारवानों को तथ्य समझने में देर नहीं लगती। वे इस प्रकार के व्यवहार से खिन्न ही होते हैं।

ब्राह्मण के पतन की यही दरद भरी कहानी है। आज वंश परंपरा की दृष्टि से ब्राह्मणों की संख्या करोड़ों में है। जनसंख्या की दृष्टि से अन्य जातियों की तुलना में वे ही सबसे अधिक हैं पर कर्म से जो ब्राह्मण हों ऐसे लोगों की संख्या लाखों क्या, हजारों क्या, सैंकड़ों से भी कम होगी। किसान ब्राह्मण, हलवाई ब्राह्मण, नौकर ब्राह्मण, नाई ब्राह्मण, दरजी ब्राह्मण, बजाज ब्राह्मण, व्यापारी ब्राह्मण आदि अगणित वर्ग और श्रेणी के वे मौजूद हैं, पर ब्रह्म कर्म परायण ब्राह्मणों की संख्या तेजी से घटती चली जा रही है और खतरा यहाँ तक पैदा हो गया है कि कहीं यह परंपरा ही नष्ट न हो जाए। यदि यह पुण्य परंपरा नष्ट हो गई तो भारतीय धर्म एवं संस्कृत का ही नहीं, सारी मनुष्य जाति का बहुत बड़ा दुर्भाग्य होगा।

यह ब्रह्म परंपरा नष्ट न हो—ब्रह्म परंपरा को नष्ट नहीं होने देना चाहिए। समाज-शरीर का शीर्ष ही अस्त-व्यस्त हो गया तो शेष अंगों का भी क्या बनेगा? धार्मिक नेतृत्व ही नष्ट हो गया तो धार्मिकता कहाँ बचेगी? अतएव नव-निर्माण की इन पुण्य घड़ियों में यह प्रयास होना ही चाहिए कि जन-मानस में आस्तिकता एवं धार्मिकता का प्रकाश उत्पन्न कर सकने वाले उत्कृष्ट व्यक्तित्व का अस्तित्व बना रहे। सच्चरित्रता भाषणों से नहीं अनुकरणीय आदर्श सामने प्रस्तुत करके सिखाई जाती है। प्राचीनकाल में ऋषि जीभ से उतना प्रभाव नहीं डालते थे, जितना अपने उज्ज्वल चरित्र से। राजनीति में चतुरता और योग्यता के आधार पर नेतृत्व किया जा सकता है, पर धार्मिक नेतृत्व तो चरित्रवानों के हाथ में ही रहेगा। उसमें थोड़ी भी त्रुटि रहेगी तो वाणी का कोई विशेष प्रभाव न रह जाएगा। मोर जैसा बोलने वाले वक्ताओं के चरित्रगत दोष अब जनता के सामने आते हैं तो वे सभी की दृष्टि से गिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाते हैं और फिर उनके प्रवचनों का भी कोई मूल्य नहीं रह जाता। अतएव ब्रह्म-परंपरा को स्थिर रखने के लिए जो आगे आएँ उन्हें सबसे पहले अपने व्यक्तित्व का स्तर ऐसा उज्ज्वल एवं विकसित रखना होगा जिससे बिना कहे भी दूसरों को उत्साहवर्द्धक प्रेरणा मिलती रहे।

ब्राह्मणत्व, दर्शन और कर्त्तव्य—व्यक्तित्व एवं जीवन निर्माण की साधना, आदर्शवाद को अंत:करण से परिपक्व करने वाली उपासना के साथ-साथ ब्राह्मण का तीसरा कर्त्तव्य अनवरत समाज सेवा का है। इसमें इसका तन, मन, धन सब कुछ समर्पित रहना चाहिए। मस्तिष्क उसी की बात सोचे और शरीर भी वही क्रिया करे तो समझना चाहिए कि ब्राह्मण, जीवन सार्थक हुआ। उसमें न आलस्य के लिए गुंजाइश है और न प्रमाद के लिए। विश्व मानव को विराट ब्रह्म की प्रत्यक्ष प्रतिमा मानकर उसका अभिषेक ज्ञानरूपी अमृत से करते रहना यह भगवान का सर्वश्रेष्ठ भजन और आत्म-कल्याण का सबसे उत्तम साधन है। ब्रह्म-धर्म की आत्मा यही है। इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए देवता ब्राह्मण का शरीर धारण कर इस धरती पर अवतार लेते हैं। धर्म की स्थापना और अधर्म का नाश यही अवतार का उद्देश्य है। ब्राह्मण का देव अवतार भी इसलिए है। वह ज्ञानरूपी तलवार लेकर मैदान में उतरता है और अन्याय एवं अज्ञान के शासन को दूर करता चला जाता है। परशुराम जी ने इस पृथ्वी पर ऐसा ही अज्ञानान्धकार अपने कुल्हाड़े के बल पर २१ बार मिटाया था। अज्ञानी को नहीं अज्ञान को मारने के लिए ब्राह्मण का कुल्हाड़ा शूरवीर योद्धा की तरह निरंतर चलता ही रहता है।

देवताओं के आशीर्वाद-वरदान से हमारा कल्याण होता है इसलिए उनकी आराधना करके हम उनका अनुग्रह प्राप्त करने का प्रयत्न किया करते हैं। भू-सुरों की, ब्राह्मणों की अनुकंपा से भी अगणित मानवों का अपार हित साधन होता है, इसलिए उनके आगे हम मस्तक झुकाते हैं और उनका आशीर्वचन समय-समय पर प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। आत्मा-परमात्मा का ही तो अंग है। मल, आवरण, विक्षेपों-कषाय-कल्मषों का कूड़ा-कचरा जमा हो जाने से ही उसका शुद्ध स्वरूप ढँक जाता है, मलीन बन जाता है। इन आवरणों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हटा दिया जाए तो आत्मा में परमात्मा की झाँकी परिलक्षित होती है। उसमें सारे ईश्वरीय गुण प्रकट होते हैं और अनेक बार तो ईश्वरीय सामर्थ्य भी बड़ी मात्रा में उनके भीतर विद्यमान रहती है। जिस प्रकार परमात्मा का सान्निध्य एवं अनुग्रह प्राप्त करके मनुष्य श्रेय-सत्परिणाम प्राप्त करता है उसी प्रकार समुचित आत्मा वाले ब्राह्मणों का संपर्क भी उसके कल्याण का निमित्त बनता है। जबकि धनी, गुणी, विद्वान, सत्ताधारी बड़े आदमियों की समीपता एवं कृपा प्राप्त कर लेने पर साधारण मनुष्य कई तरह के लाभ प्राप्त कर लेते हैं तो आध्यात्मिक विभूतियों से परिपूर्ण संत-सज्जनों की कृपा का लाभ हमें क्यों न मिलेगा। कल्पवृक्ष अपने नीचे बैठने वोले को कल्पवृक्ष नही बना सकता, केवल उसकी कुछ कामनाएँ पूर्ण कर सकता है, पारस लोहे को सोना बना सकता है, पारस नहीं, अमृत पीकर व्यक्ति अमर बन सकता है, स्वयं अमृत नहीं बन सकता, किंतु साधु-ब्राह्मण में यह विशेषता है कि उसका कृपा पात्र अपने समीप आने वाले व्यक्ति को अपने जैसा ही बना देता है। नारद के संपर्क से वाल्मीकि के डाकू से ऋषि बनने की कथा प्रसिद्ध है। ध्रुव जैसा अज्ञान बालक विश्व ब्रह्मांड का केंद्र बिंदु, अजर-अमर ध्रुव तारा नारद जी की ही कृपा से बन गया। भगवान बुद्ध के संपर्क से अँगुलिमाल डाकू और अंबपाली वेश्या जैसे पतितों ने समुचित जीवन उपलब्ध किया था। समर्थ गुरु रामदास ने एक साधारण से मराठा बालक को छत्रपति शिवाजी बनाकर खड़ा कर दिया था। विश्वामित्र द्वार परीक्षा में तपाया हुआ हरिश्चंद्र एक साधारण राजा नहीं, इतिहास का सूर्य सत्यवादी हरिश्चंद्र बन गया अन्यथा उस बेचारे का नाम भी आज सुनने में न आता। गाँधी के संपर्क में आने वाले कितने जवाहर लालों को यशस्वी होने का अवसर मिला अन्यथा उन्हें पड़ोसी भी जान न पाते। साधु, ब्राह्मणों की कृपा का ऐसा ही फल होता है। चंदन की सुगंध भी शीतल होती है। हिमालय में जाकर उष्णता के रोग से व्यथित रोगी भी शीतलता भरी शांति अनुभव करते हैं। संत महान होते हैं, उनकी समीपता एवं अनुकंपा का फल भी महान ही होना चाहिए।

प्रायश्चित का साहस न करें-पिछले दिनों ब्राह्मणत्व का स्तर गिरा है इसका उत्तरादायित्व हमें स्वीकार करना चाहिए और उसका प्रायश्चित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। हिंदू धर्म में भारतीय दर्शन की मुख्य मान्यताओं के सर्वथा विपरीत आज अगणित अंध-विश्वास, मूढ़ताएँ, रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ एवं भ्रांत-धारणाएँ फैली हुई हैं, वे अब धर्म का एक अंग-सी बन चली हैं, कितने ही व्यक्ति तो इन रूढ़ियों को ही धर्म का एकमात्र साधन समझते हैं। जो किसी के हाथ का छुआ हुआ भोजन कर लेता है, वह अधर्मी और जो न किसी को छूता और न छुआ खाता है, वह धर्मात्मा माना जाता है। वंश, वेश, परिधान, उपकरण, तिलक, छाप आदि को धर्म का स्वरूप मान लिया गया है। इस भ्रांति से यह हानि हुई कि लोग धार्मिकता का वास्तविक स्वरूप ही भूल गए और केवल आवरण कर्मकांडों में उलझे रहकर यह सोचने लगे कि हमने धार्मिकता एवं आस्तिकता पूरी कर ली, अतएव जो सत्परिणाम इनके मिलने चाहिए वे सब ही मिल जाएँगे। जरा-जरा से कर्मकांडों से स्वर्ग-मुक्ति मिलने के संबंध में निश्चिंत हो जाना एक ऐसी भयानक भूल है जिसके कारण लोग अपने कठोर कर्त्तव्यों का पालन करने की उपेक्षा करने लगते हैं। न कोई उच्च-चरित्र बनाना है और न आदर्शवादी बनना है। जब सस्ते नुस्खे से ही काम चल गया तो कोई कष्ट सहने के लिए तैयार भी क्यों हो?

प्रस्तुत भ्रांतियाँ अनेक हैं। सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, शारीरिक, मानसिक हर क्षेत्र में भ्रांतियों का घटाटोप छाया हुआ है। इस जंजाल में से जब तक हम अपने देश की जनता को न निकाल सकेंगे तब तक उसकी वास्तविक प्रगति हो सकना असंभव ही रहेगा। आज ब्राह्मण को ही यह स्थिति सुधारनी चाहिए। उसी के पूर्वजों ने यह जाल-जंजाल बिछाए हैं। इसलिए उनको उखाड़ने-उधेड़ने का तप भी अब उन्हें ही करना चाहिए। विचार-क्रांति के लिए आज के ब्राह्मण को बुद्ध, शंकराचार्य, दयानंद, गाँधी, विवेकानंद, राममोहन, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महर्षि कर्वे, ठक्कर जैसे सुधारवादियों की तरह आगे आना चाहिए। सुकरात, मन्सूर, ईसा, गाँधी आदि ने तो प्राण तक दिए थे। अँग्रेजों का अनीति शासन उखाड़ने वालों ने हँसते-हँसते गोलियाँ सही थीं, हमें कम से कम गालियाँ तो सहनी पड़ेंगी। उससे कम में इतने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़े पाप का प्रायश्चित हो भी कैसे सकता है। भारतीय जन-मानस की भावना, मान्यता, विचारणा, एवं आस्था की दृष्टि से हमें पवित्र, परिष्कृत एवं परिमार्जित बनना ही होगा। यह कार्य प्रायश्चित स्वरूप अधिकाधिक श्रद्धा, अधिकाधिक तत्परता के साथ किया जाना चाहिए, तभी यह संभव होगा कि धार्मिकता की उपयोगिता लोग समझें और उसके प्रति जो अश्रद्धा एवं उपेक्षा के भाव रखे हुए हैं, उन्हें बदल लें। हिंदू धर्म की धार्मिकता एवं श्रद्धा को दलदल में नष्ट होने से उबारा ही जाना चाहिए।

छँटनी आवश्यक

अब छटनी का समय आ गया। ब्राह्मण बिरादरी मात्र तक करोड़ों व्यक्ति भले ही बने रहें, पर उन्हें इतना तो तुरंत आरंभ कर देना चाहिए कि ब्रह्मभोज के निमंत्रण स्वीकार करना एवं दक्षिणा लेना बंद कर दें। जो ब्रह्म-कर्म में लगे हुए नहीं हैं, उन्हें इसका किसी भी प्रकार अधिकार नहीं। किसान ब्राह्मण, व्यवसायी ब्राह्मण अपने को इसी वर्ग का मानें, न वे ब्राह्मणत्व का अहंकार करें और न बिना प्रतिफल चुकाने की क्षमता के ब्रह्मभोज स्वीकार करें। यदि वे इतना कर पाते हैं तो भी मानना चाहिए कि उनने ऐसे अवांछनीय कार्य से छुटकारा पा लिया जो उनके लिए सर्वथा अनुचित ही था।

ब्राह्मण रक्त की प्रतिष्ठा इतनी भी न गिरने देनी चाहिए कि जिससे यह कहा जाने लगे कि अब ब्रह्म परंपरा मिट ही गई। नये रक्त के लोगों को उसका कष्ट साध्य उत्तरदायित्व वहन करने के लिए साहसपूर्वक आगे कदम बढ़ाना चाहिए। अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को कुचलते हुए, अपरिग्रही जीवन का व्रत लेकर जन-जागरण के लिए, लोक मानस का उत्कर्ष करने के लिए धार्मिक नेतृत्व की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। विचार क्रांति के अग्रदूत बनकर नव-निर्माण अभियान में उन्हें अपना उत्साह-वर्द्धक सहयोग देना चाहिए।

जिनके यहाँ पौरोहित्य कृत्य होता है, उन्हें अपने क्रिया-कृत्यों के साथ आज की नैतिक एवं सामाजिक समस्याओं को सुलझाने की शिक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का समन्वय कर देना चाहिए। आजकल पंडित लोग अमुक धर्मानुष्ठानों में केवल पूजा-उपचार का विधि-विधान करा देने पर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि किसी भी धर्मानुष्ठान का, कर्मकांड का महत्त्व तभी है जब उसके साथ जुड़ी हुई प्रेरणा एवं शिक्षा भी यजमानों को समझाई जाए। यदि केवल मंत्रोच्चारण एवं क्रिया-कृत्य ही पूरा किया है तो मानना चाहिए कि मूल प्रयोजन पूरा न होने से वह विधि-विधान सर्वथा अधूरा ही रह गया। हिंदू समाज में अनेकों धर्म-कृत्यों का प्रचलन है, उनके साथ यदि नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा की प्रक्रिया भी जोड़ दी जाए, तो उसका परिणाम सब प्रकार उत्तम ही होगा और कर्मकांडों का उद्देश्य भी पूरा होगा।

गर्भकाल से लेकर मृत्यु पर्यंत पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, विवाह, वानप्रस्थ आदि सोलह संस्कार होते हैं। हर घर में कई-कई व्यक्ति रहते हैं। हर एक के सोलह संस्कार होते हैं। फिर इनमें से प्रत्येक का जन्म-दिवसोत्सव और विवाह-दिवसोत्सव भी मनाया जाए तो वर्ष में दस-बार तो ऐसा अवसर आ ही सकता है कि प्रत्येक गृहस्थ को उसके आवश्यक कर्त्तव्यों का ध्यान दिलाया जा सके। जिस घर में जो विकृतियाँ घुस गई हों, उनके समाधान का उपाय भी इन्हीं अवसरों पर प्रस्तुत कर्मकांडों की व्याख्या में समझाया जा सकता है। होली, श्रावणी, विजयादशमी, दिवाली, बसंत पंचमी, शिवरात्रि आदि अनेक त्योहार होते हैं। इन त्योहारों को प्राचीनकाल की भाँति सामूहिक धर्मानुष्ठान के रूप में मनाए जाने का प्रबंध करना चाहिए और उनमें जो सम्मिलित हों तो उन्हें पर्वों के साथ जुड़ी हुई समाज निर्माण की प्रेरणाएँ समझानी चाहिए। इन छोटे-छोटे आयोजनों से, संस्कारों और त्योहारों से विचार गोष्ठियों का प्रयोजन पूरा होता है। उपस्थित लोगों को बहुत कुछ सुनने, समझने का अवसर मिलता है। धार्मिक वातावरण में इसी प्रकार की शिक्षाएँ देने से उनका प्रभाव और भी अधिक पड़ता है। इन धर्म-कृत्यों को लोक शिक्षण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण माध्यम बनाया जा सकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। पुरोहित लोग यदि उन अवसरों का ठीक उपयोग करने लगें तो लोक-मानस की दिशा बदल देना कुछ भी कठिन न रहे।

ब्राह्मण ही नहीं साधु भी

ब्राह्मण की तरह भारतवर्ष में साधुता भी विश्व विख्यात है। यहाँ साधु-संतों का सदा से बाहुल्य रहा है, गृहस्थों के रूप में भी और विरक्तों के रूप में भी। साधु-सज्जन को कहते हैं। जिसमें निष्कलंक सज्जनता है, उसे साधु ही कहा जाएगा। यह सज्जनता का उच्चतम स्तर है कि अपने समय, श्रम, ज्ञान एवं मनोभाव अपने व्यक्तित्व एवं पारिवारिक आयोजनों तक सीमित न रखकर समस्त विश्व के लिए समर्पित कर दें। अपने व्यक्तित्व को सार्वजनिक संपत्ति समझें और उसका उपयोग इस प्रकार करें कि उसका लाभ अपने शरीर को एवं परिवार को ही नहीं वरन समस्त विश्व को प्राप्त हो। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की उदारता एवं महानता जिस किसी अंत:करण में उत्पन्न हो रही होगी, वह अपनी आंतरिक महानता के कारण इस धरती का देवता माना जाएगा, उसे साधु-महात्मा कहकर पूजा जाएगा।

ज्ञान के प्रकाश का अरुणोदय—साधु गेरुआ वस्त्र पहनते हैं। यह रंग प्रात: की ऊषा का है। अरुणोदय के समय सर्वत्र लालिमा छाई रहती है, यही भगवा रंग है। ब्रह्म-मुहूर्त की पूर्व से उदय होने वाली लालिमा संसार में नव जीवन का संचार करने, नई स्फूर्ति भरने, जागरण का संदेश देने एवं प्रकाश उत्पन्न करने आया करती है। साधु का जीवनोद्देश्य भी यही होता है। अपने उद्देश्य एवं कार्यक्रम की जानकारी सर्वसाधारण को कराने के लिए ये वस्त्र पहने जाते हैं। जिस प्रकार फौज या पुलिस की वरदी पहने हुए व्यक्ति को हर कोई आदमी आसानी से पहचान लेता है और यदि उससे कुछ प्रयोजन होता है तो उसकी सूचना उन्हें देता है। बड़े रेलवे स्टेशनों पर मुसाफिरों की सेवा-सहायता एवं मार्ग दर्शन के लिए कुछ कर्मचारी नियत रहते हैं। उनकी भुजा पर एक पट्टी लगी रहती है, जिनमें उनका परिचय लिखा होता है। यह इसलिए कि जिन मुसाफिरों को उनकी आवश्यकता हो, वे उन्हें पहचान कर आवश्यकता बता सकें। ठीक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसी प्रकार का यह परिचय चिन्ह गेरुआ वस्त्र है। इसे जो व्यक्ति पहने हो, समझना चाहिए कि त्यागी, परमार्थी व्यक्ति है, यह अपने कुटुंब की सीमा में सीमित नहीं रहा, अब इतने सारे विश्व को अपना कुटुंब मान लिया है और जिस प्रकार साधारण व्यक्ति अपने कुटुंब की साज-सम्हाल एवं सेवा करता है उसी प्रकार यह हर किसी की प्रेम एवं तत्परता पूर्वक सेवा करने का व्रत लिए हुए है। भगवा वस्त्र इसी घोषणा के लिए है।

जिस प्रकार अरुणोदय, संसार का अंधकार दूर करने के लिए होता है, उसी प्रकार अरुणोदय जैसे भगवा वस्त्र पहन कर साधु अपने लिए यह एक स्मृति चिन्ह बना लेता है कि उसके भावी कार्यक्रमों की रूप-रेखा एवं आधार क्या है? उसे प्रातःकालीन सूर्य की तरह सौम्य एवं मनभावन रहना है। मध्याह्न के तेजस्वी सूर्य की तरह प्रखर नहीं बनना है, जिसकी गरमी सहन करना दूसरों को कष्ट कारक हो। प्रातःकालीन सूर्य प्रकाश तो देता है, पर अरुणिमा मिश्रित पीतवर्ण होने के कारण उसे खुले नेत्रों से आसानी से देखा जा सकता है। उससे किसी को कष्ट नहीं होता, वरन सबको प्रसन्नता होती है। मध्याह्न की तपन से तो लोग बचते हैं, छाया का आश्रय टटोलते हैं और सोने व विश्राम करने की चेष्टा करते हैं, पर प्रातःकालीन सूर्य के उदय होते ही सब उसका दर्शन करते हैं और कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। साधु अपना जीवन वैसा ही बनाता है। उसका कार्य अज्ञान-अंधकार को दूर करना, ज्ञान के प्रकाश को फैलाना होता है। यह सेवा मनुष्य जाति की सबसे बड़ी सेवा है, इसे हर कोई नहीं कर सकता, जिसने अपने चरित्र, अंतःकरण एवं मस्तिष्क का समुचित विकास किया होगा, उसके लिए यह संभव है कि अज्ञानान्धकार के रौरव नरक में डूबते-उतराते असह्य अगणित कष्ट सहने वाले मनुष्यों को अपनी ज्ञान-रूपी नौका पर सवार कराके पार कर सके। यह साहस और अधिकार हर किसी को कहाँ? इसके लिए अपना व्यक्तित्व परिष्कृत करना होता है। यह हिम्मत साधु की ही है कि वह अपनी व्यक्तिगत समस्त महत्वाकांक्षाओं को समाप्त करके संसार में ज्ञान-प्रकाश फैलाने की महती सेवा के लिए अपना बलिदान करें। जिन्होंने इतना महान पारमार्थिक व्रत लिया हो उन्हें जीवित-शहीद ही कहना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके दर्शन से भी मनुष्य धन्य हो जाता है। जो इतनी आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण सेवा के लिए अपने आपको आत्मदानी की तरह समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं, उनके लिए महात्मा, संत, महापुरुष जिन शब्दों का भी प्रयोग किया जाए कम है।

वेष-भूषा रहन-सहन का प्रयोग—साधु अपरिग्रही होते हैं, वे न्यूनतम खरच में अपनी गुजर करते हैं और कम से कम साधन-सामान अपने पास रखते हैं। बर्तन के नाम पर लौकी का खोखला बनाकर कमंडलु ले लिया जिसमें कुछ भी लागत नहीं लगती, लकड़ी काट-छील कर खड़ाऊँ बना लिए। वस्त्रों के बिना काम चल जाए, शरीर को सरदी-गरमी का कष्ट न सहना पड़े इसलिए त्वचा पर भस्म मल ली। अधिक सरदी पड़ने लगी और जंगलों मे हिंसक पशुओं के आक्रमण का भय हुआ तो धूनी जला ली। धूनी जलाने की आवश्यकता इसलिए भी पड़ी कि जंगलों में बड़े-बड़े पेड़ उखड़ कर आमतौर से गिरते रहते हैं, पत्थरों में जड़ें गहरी नहीं जातीं, दूसरे चट्टानें इधर-उधर खिसकती रहती हैं, फलस्वरूप पेड़ अपना संतुलन खो बैठते हैं और एक ओर झुककर गिर पड़ते हैं। उनके गिरने से निकलने तक का रास्ता बंद हो जाता है। मानव एवं पशु दोनों को ही इससे असुविधा एवं कष्ट का ही सामना करना पड़ता है। ऐसी दशा में यह भी उस प्रदेश के लिए सेवा-कार्य ही है कि उन गिरे हुए पेड़ों को हटाकर जला दिया जाए। जलाने के अतिरिक्त वहाँ उनका कोई उपयोग भी नहीं हो सकता। इससे तपस्वी को अपना शीत निवारण, हिंसक पशुओं से रक्षा, भोजन की सुविधा तथा जंगल साफ कर देने की सेवा का प्रयोजन पूरा करने का सहज अवसर मिल जाता है। इसलिए धूनी जलाना भी आवश्यक है।

जंगलों में मकान बनाना कठिन था, इसलिए फूँस की झोंपड़ी बनाना या जमीन खोदकर गुफा बना लेना सुविधाजनक होता है। ऐसे निर्माण कोई वनवासी अपने निज के श्रम के बिना दूसरों की सहायता लिए भी कर सकता है। इसलिए निवास के लिए वैसे ही निर्माण उपयुक्त समझे गए हैं। जंगलों में अपनी मौत मरे हुए हिरन, सिंह, व्याघ्र आदि के शरीर पड़े होते हैं, तो उस प्रदेश में निवास करने वाले उनका चर्म उतार लेते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उनसे अपने ओढ़ने-बिछाने, पहनने आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं। यह सभी बातें वनवासी जीवन के उपयुक्त साधारण-सी रहन-सहन संबंधी व्यवस्थाएँ हैं। इनमें साधुता का कोई सीधा संबंध नहीं है। यदि जंगल में न रहकर बस्ती में रहना है तो इनमें से किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं रह जाती वरन सच तो यह है कि यह उपकरण उसी प्रकार अनुपयुक्त हो जाते हैं, जैसे ग्रीष्म ऋतु में सरदी के लिए प्रयोग होने वाले भारी तथा कसे हुए वस्त्र।

अंधानुकरण से क्या लाभ?—आज साधु जीवन का लक्ष्य एवं कार्यक्रम भुला दिया गया है और उस वेष-भूषा को धारण करना, साधु होने का प्रमाण मान लिया गया है, वह वन्य जीवन के उपयुक्त तो है, पर नगरों में रहने पर सर्वथा अनुपयुक्त है। नारियल के बने हुए जो कमंडलु आजकल बाबा लोग लिए फिरते हैं, वे तीस-तीस रुपए तक की कीमत में आते हैं। जबकि पीतल की छोटी बाल्टी दस-पंद्रह रुपए में खरीदी जा सकती है,उनको नारियल की तरह थोड़ी चोट लगने से टूटने का डर भी नहीं, फिर भीतरी सफाई भी आसानी से हो जाती है। ऐसी दशा में नारियल का तीस रुपए वाला कमंडलु लेकर साधु के उपयुक्त मितव्ययिता कहाँ हुई? यह तो खरच और बढ़ गया।

धूनी जलाने की बात वन्य प्रदेशों में उपयुक्त थी। अखंड-अग्नि रखी हो तो यज्ञ-कुंड में विधिवत रखा जाना चाहिए और उसमें नित्य शास्त्रोक्त यज्ञ होना चाहिए। दोनों में से एक भी प्रयोजन नहीं फिर भी तीस-चालीस रुपए मन की दो-तीन मन लकड़ी नित्य जलाई जाए और दस-बारह रुपए का अन्य नित्य का खरच और बढ़ जाए तो उसका क्या उपयोग रहा? लकड़ी की आजकल भारी कमी है। उतनी लकड़ी में जनता के आवश्यक काम चलते, वही बिना किसी प्रयोजन के जला दी गई तो उसमें साधुता का कौन-सा प्रयोजन पूरा हो गया?

जंगलों में मरे पड़े जानवरों के चमड़े का उपयोग समझ में आता है, पर आजकल जबकि हजार के पीछे ९९९ चमड़े जीवित पशुओं की हत्या करके विशेषतया चमड़े के लालच में प्राप्त किए जाते हैं, उस चमड़े का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपयोग एक प्रकार के मांसाहार जैसा ही हो गया। इसे बगल में दबाए फिरना, गंदगी और बदबू से लिपटे रहना कौन-सी बुद्धिमानी की बात है? कपड़े, कुश, ऊन आदि के आसन एक से एक सुंदर, बढ़िया, सुविधाजनक एवं सस्ते मिल सकते हैं, फिर बेचारे हिरन की जान के, चमड़े के ग्राहक बनने में क्या अध्यात्म रहा? जबकि कपड़ा मिलना अब उतना दुर्लभ नहीं, तो भस्म मलने की भी उतनी उपयोगिता नहीं रह गई। जब जंगल में रहकर कंदमूल-फूल खाने वाली आहार प्राप्त करने वाली बात की परंपरा नहीं निबाही जा सकती, अन्न खाने, मकान में रहने जैसी सुविधाएँ स्वीकार की जा सकती हैं, तो फिर भस्म मलने के स्थान पर कपड़ा लेने में क्या हर्ज? जो कपड़ा पहनते हैं उन्हें भस्म मलने की क्या आवश्यकता? जब धूनी नहीं जलती तो आग संभालने वाला कड़ा या चिमटा लिए-लिए फिरना किस प्रयोजन के लिए?

साधुता का वेष—विन्यास से तनिक भी संबंध नहीं। जंगल में जिन बातों की उपयोगिता है, वे वहाँ प्रयोग की जाएँ और जिनकी ग्राम-नगर जीवन में आवश्यकता है, वे यहाँ काम में लाई जा सकती हैं। वनवास में हजामत कैसे बने? कौन बनावे? वहाँ जटा-जूट रखना ही पड़ेगा। किंतु नगर में रहने वाले यदि बालों की उतनी सफाई न रख सकें तो बालों को कटा-मुड़ा भी सकते हैं। अब जबकि निवास के लिए हवादार और सुविधाजनक स्थान मिल या बन सकता है तो गुफा खोदने और उसमें बंद हवा के कारण हो सकने वाली असुविधा को सहने का क्या प्रयोजन?

गुणों का अनुकरण—गुणों के स्थान पर कलेवर को प्रधानता देना, मनुष्य की अंधमान्यता का चिह्न है। प्राचीनकाल के ऋषि-महात्मा अमुक प्रकार के वस्त्र पहनते थे, अमुक तरह नहाते थे, अमुक उपकरण बरतते थे तो हम भी उस प्रकार का आवरण बनाने से वैसे ही साधु बन सकते हैं। यह सोचना और मानना हास्यास्पद है। शरीर निर्वाह करने की बाह्य पद्धति इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं कि उसके बदलने मात्र से कोई व्यक्ति साधुता एवं श्रेष्ठता प्राप्त कर सके। यदि ऐसा ही होता तो नाटक, स्वांग एवं फिल्मों में काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने वाले अभिनेता साधुओं का वेष-विन्यास सजधज के साथ बनाते रहते हैं, वे क्यों संत नहीं हो जाते? जैसे के तैसे नट-विदूषक क्यों बने रहते हैं? वेष-परिवर्तन से यदि व्यक्तित्व बदल जाता तो उससे सस्ता और सुगम उपाय साधुता प्राप्त करने का था ही नहीं?

वेष साधु जैसा हो न हो, उससे कुछ बिगड़ता नहीं। प्रश्न केवल यह है कि साधु के उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य को निबाहा जा रहा है या नहीं? यदि निबाहा जा रहा है तो वेष कैसा ही होने पर भी वह साधुता अभिनंदनीय मानी जाएगी, उसे मुक्त कंठ से भूरि-भूरि सराहा जाएगा। किंतु यदि कर्त्तव्यों की उपेक्षा और वेष की सजावट की सराहना की जा रही है तो उसे निंदनीय-वंचकता ही कहा जाएगा? गधा यदि सिंह की खाल ओढ़कर सिंह बनाना चाहे तो उसका यह प्रयत्न अवांछनीय एवं अनैतिक समझा जाएगा। दुनियाँ भले ही नैतिक दृष्टि से गिरती चली जा रही हो, पर बुद्धि अवश्य बढ़ रही है। जिनमें थोड़ी भी बुद्धि होगी वे गुण विहीन आडंबर को उपासास्पद ही मानेंगे। विदूषक अनेक तरह के वेष बनाकर लोगों का मनोरंजन करते हैं। कभी राजा, कभी रानी, कभी बंदर, कभी देवता का वेष बना लेते हैं, और अपना आर्थिक स्वार्थ पूरा करते हैं। साधु का वेष बनाकर कोई व्यक्ति मुफ्त में गुजारे की व्यवस्था हल कर लेता है, तो उसका कृत्य-विशुद्ध विदूषक जैसा ही कहा जाएगा।

साधुता का सुअवसर— पारिवारिक उत्तरदायित्वों में लगे हुए ब्राह्मण तथा अन्य लोकसेवी अपने-अपने सीमित क्षेत्र में ही काम कर पाते हैं। बहुत दूर एवं बहुत दिनों के लिए बाहर जा सकना उनके लिए संभव नहीं होता। ऐसे लोक-सेवी ब्राह्मण हर जगह होते भी नहीं। इसलिए परिव्राजक के रूप में भ्रमण करते हुए संत-महात्मा को यह देखना पड़ता है कि कहीं कोई क्षेत्र ऐसा तो नहीं कि वहाँ विकृतियों का बाहुल्य हो चला हो। जहाँ ऐसे स्थान मिलते हैं, वे वहाँ रुक जाते हैं, वातावरण को सुधारते हैं और फिर आगे के लिए चल पड़ते हैं। आजकल तो बहुत-सा काम पत्र-व्यवहार द्वारा अथवा अखबारों द्वारा भी हो जाता है। प्राचीनकाल में जब ऐसी सुविधाएँ नहीं थीं, तब यही परिव्राजक लोग एक स्थान से दूसरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थान तक प्रेरणा-वर्द्धक कृतियों का परिचय कराते थे, सत्पुरुषों की विरुदावलियाँ सुनाते थे और जहाँ जैसा अवसर होता था वहाँ वैसा प्रशिक्षण करते थे। नारद जैसे ऋषि-महर्षि, मुनि जन-जागरण का अलख जगाते हुए देश के कोने-कोने में भ्रमण करते रहते थे। मंदिरों के डाक-बंगले उनके ठहरने के लिए बने थे, वहाँ उनके भोजन पकाने का भी प्रबंध रहता था, फिर जहाँ भी जाना हो चल दिए। जिस प्रकार पुलिस के सिपाही रात्रि में सीटी बजाते हुए पहरा देते हैं और सोते हुए लोगों का चोर-उचक्कों से कोई अहित न होने पावे ऐसा प्रयत्न करते हैं, उसी प्रकार साधु-महात्मा परिव्राजक बनकर तीर्थ-यात्रा जारी रखते हैं, और मार्ग में जहाँ जो धर्म विकृतियाँ दीखती हैं, उसे सुधारने के लिए वहीं रुक जाते हैं। धर्म, समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र की सुरक्षा में सावधान एवं कर्मठ प्रहरी का नाम ही संन्यासी है। साधु एक प्रकार का बलिदानी है। जिसने व्यक्तिगत एवं पारिवारिक सब प्रकार के लोभ-मोह से ऊँचा उठकर संसार में धर्म और ज्ञान की ज्योति जगाए रहने के लिए अपने आपको तिल-तिल कर खपाते रहने का व्रत लिया होता है। भारत की साधु परंपरा का आदर्श यही है।

भारत का प्राचीन गौरवमय इतिहास वस्तुतः साधु-इतिहास ही है। उन्होंने उन महान मान्यताओं, भावनाओं, प्रेरणाओं एवं क्रिया-पद्धतियों का आविर्भाव, प्रसार एवं अभिवर्द्धन किया था, जिनके कारण इस देश का बच्चा-बच्चा नर-रत्न एवं महापुरुष बन सका। यहाँ के हर मनुष्य का व्यक्तित्व, आदर्श, लक्ष्य एवं कर्त्तव्य इतना उत्कृष्ट था कि उसकी गणना भूलोकवासी देवताओं में की जाने लगी थी। किसी इमारत को बनाना एवं उद्योग को खड़ा कर देना जितना कठिन है, उससे हजारों गुना कठिन कार्य व्यक्तियों का निर्माण है। मानवीय चरित्र की इमारत बनाना इतना महान है कि उस पर ताजमहल बनाने वाले हजार इंजीनियरों को निछावर किया जा सकता है। नारद जी ने वाल्मीकि को डाकू से ऋषि बना दिया। उनकी कला की जितनी सराहना की जाए उतनी ही कम है। जो कलाकार भारत माता की कोख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से पैदा हुए हर पत्थर को खराद कर, काट-छाँटकर जगमगाते रत्नों के रूप में परिणत करते थे उनकी कलाकारिता को जितना सराहा जाए उतना ही कम है।

ऋषियों का महान कर्त्तव्य—चरक, सुश्रुत, वागभट्ट, धन्वन्तरि, अश्विनी कुमार आदि ऋषियों ने चिकित्सा-विज्ञान, शल्यक्रिया, वनस्पति अन्वेषण आदि शोध कार्यों में अपना जीवन घुलाया जिसके फलस्वरूप मानव-प्राणी की शारीरिक व्यथाओं का हल निकल सका। शिल्प, ज्योतिष, रसायन, कृषि, संगीत, भाषा, विधि, वाहन आदि अनेक विज्ञान की शाखा-प्रशाखाओं की ऐसी शोध उन्होंने की जिसका लाभ आज भी समस्त संसार उठा रहा है। समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान, योग-विज्ञान, भाव-विज्ञान, धर्म-विज्ञान आदि विचार विज्ञान की अगणित शाखा-प्रशाखाओं को उनने जन्म दिया। वे कितने विद्वान, वैज्ञानिक, शोधकर्त्ता, लगनशील, कर्मठ एवं परोपकारी थे। नर-नारायण की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित करने की कितनी महान साधना की थी उन्होंने। उनके उपकार का प्रत्युत्तर चुका सकना समस्त संसार के लिए संभव नहीं। जब तक सूर्य-चंद्र विद्यमान हैं, उनके महान कर्त्तव्य के लिए मानव-जाति सदा उनको श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए अपना मस्तक झुकाती रहेगी।

वैज्ञानिकों को अपने शोध-कार्यों के लिए एकांत की आवश्यकता होती है। प्रकृति की समीपता शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाती है। इस दृष्टि से वे बस्तियों से थोड़े हटकर ही रहते थे। बड़े नगर उन दिनों में थे भी नहीं। आबादी कम और भूमि अधिक थी, वन प्रदेशों का बाहुल्य था, इन परिस्थितियों में आमतौर से सभी को वनवासी रहना पड़ता था। ऋषि कुछ और भी हटकर रहते थे, यह उनकी निवास संबंधी अभिरुचि थी। अभी भी परिष्कृत दृष्टिकोण के लोग अपने कोठी-बँगलों के आस-पास पेड़-पौधे उगाते हैं। बगीचों में भी उनके समीप का रहना-बैठना ही पसंद करते हैं। यह रहन-सहन का अच्छा ढंग है। इससे यह अर्थ नहीं लगाया जाना चाहिए कि वे कुछ काम ही न करते थे। सामाजिक उत्तरदायित्वों को छोड़कर एकांत वनों में वन्य पशुओं की तरह रहने चले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाते थे, यदि ऐसा होता तो उन कर्त्तव्यों का पालन कैसे कर पाते, जिसके आधार पर सारे भारतीय समाज की संपन्नता, प्रगति, शिक्षा एवं महानता निर्भर थी। हर ऋषि के आश्रम में कृषि, गोपालन से लेकर विशाल गुरुकुलों तक का विस्तृत कार्यक्रम बना रहता था। देश-देशांतरों से छात्र उनके यहाँ अध्ययन करने आते थे। बड़े-बड़े शास्त्रों और ग्रंथों का प्रवचन होता था। मनीषियों की विचारधाराओं और गोष्ठियों के आयोजन होते थे। विश्व-व्यापी समस्याओं के हल खोजे जाते थे और उन हलों को कार्यान्वित करने के लिए विशाल कार्यक्रम बनते थे। धार्मिक मेले इसी उद्देश्य से लगते थे कि वहाँ पहुँचकर देशभर के मनीषी लोग समय-समय पर बदलती रहने वाली परिस्थितियों के समाधान का उपाय करें। प्रयाग का कुंभ बारह वर्ष बाद और हरिद्वार, नासिक, उज्जैन, वृंदावन आदि के सम्मेलन एक धर्म-संसद के सूत्र थे। इनमें महत्त्वपूर्ण निर्णय होते थे। और वे विराट तैयारियों के साथ सुसंगठित रूप से कार्यान्वित होते थे। राज्य-शासन का नियंत्रण ऋषि ही करते थे, सूर्यवंशियों के पुरोहित वशिष्ठ जी के परामर्श से उनकी राज्य-व्यवस्था का क्रम चलता था। ऐसी ही व्यवस्था अन्य राजाओं के यहाँ भी थी। चाणक्य जैसे प्रधान मंत्री ऋषि रूप में ही भारत का विशाल साम्राज्य सँभालते थे।

कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का पालन—यदि ऋषियों ने अपने इन सामाजिक उत्तरदायित्वों को तिलांजलि दे दी होती और आज के साधु-बाबाओं की तरह संसार को माया, मिथ्या, भ्रम, प्रपंच, भवसागर कह कर इससे दूर रहने का प्रयत्न किया होता, कर्त्तव्यों को छोड़ बैठने का नाम त्याग माना होता तो भारतीय इतिहास का गौरवास्पद स्वरूप बनता ही नहीं। अपनी ऋद्धि-सिद्धि और स्वर्ग मुक्ति के जंजाल में उलझे हुए वे अन्य संकीर्ण स्वार्थियों की तरह अपना व्यक्तिगत लाभ उठा लेते पर उनके द्वारा संसार का कोई हित साधन संभव न हुआ होता। भारतीय समाज के उत्कर्ष में वे योगदान न दे सके होते। पर आज जैसी उलटी विचारधारा उन दिनों थी कब ? जहाँ विश्व मानव को विराट ब्रह्म समझा गया हो और स्वेद कणों से स्नान कराने पर भगवान के प्रसन्न होने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावना रखी गई हो, वहाँ कर्त्तव्यों को त्याग, गुफा में बैठे माला सटकाते रहने तक सीमित रहने की बात किसी के मन में घुस ही नहीं सकती थी। भगवान बुद्ध ने सारे जीवन भ्रमण करके धर्म प्रचार किया। जब उनका मरण समय आया तब उनके शिष्यों ने पूछा—'तथागत! आप मुक्ति के अधिकारी बनेंगे।' बुद्ध ने कहा—'जब तक एक भी भव-बंधनों में बँधा हुआ है तब तक मैं कदापि मुक्ति स्वीकार नहीं करूँगा। बार-बार जन्म लूँगा, मरूँगा और निरंतर विश्व-मानव की सेवा करता रहूँगा।' अकेले बुद्ध ही क्यों शंकराचार्य, दयानंद, विवेकानंद, गाँधी, गुरु गोविंदसिंह, समर्थ गुरु रामदास आदि साधुओं ने पिछले ही दिनों कितने महत्त्व के कार्य किए हैं, इसे कौन नहीं जानता। प्राचीन काल में व्यास, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, भारद्वाज, गौतम, कपिल, कणाद आदि ऋषियों ने अपने महान कर्त्तव्य के द्वारा भारत ही नहीं सारे संसार को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की थी। उनके विचार यदि आज जैसे पलायनवादी रहे होते, संसार को माया-जाल बताकर किसी कोने में जिंदगी के दिन काटने के लिए चुपचाप जा छिपे होते तो उनकी क्या महत्ता रहती और उस तरह की साधुता अपनाने से उनका या संसार का क्या भला होता?

उल्टी गंगा न बहे—आज जहाँ सभी कुछ उलटा हो रहा है, वहाँ साधुता के सिद्धांत और आदर्श भी उलटे हो रहे हैं। वस्तुतः संत त्यागी वह होता है, जो समाज को दे बहुत और बदले में ले कम, पर अब यह परिभाषा बदल गई है। जो लोगों से मान, धन आदि लेता तो निरंतर रहे पर देने के नाम पर पूरी तरह अँगूठा दिखा दे वही महात्मा कहा जाए। देने का प्रश्न भी कैसे उत्पन्न हो, जब संसार को माया, मिथ्या, स्वप्न, भवसागर मान लिया गया और इससे जल्दी से जल्दी छूट भागने की ठान ली गई तो सेवा की बात मन में उठेगी ही कैसे? भला भवसागर की भी कहीं सेवा की जाती है? अच्छा यह होता कि लेने के समय भी यही मान्यता स्थिर रखी जाती। जब देना नहीं तो लेना क्यों? भवसागर का दिया हुआ भोजन, वस्त्र, धन, सम्मान यह सब बातें भी मिथ्या समझकर उसी तरह त्याग दी जातीं जिस तरह कर्त्तव्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालन एवं सेवा-धर्म त्याग दिया गया है तो उत्तम होता। फिर किसी को उँगली उठाने की गुंजाइश तो न रहती। प्राप्त करने के लिए संसार सत्य और बदला चुकाने के लिए मिथ्या। यह दुमुँही नीति अपने आपको भ्रम में डालने एवं झूठा आत्म संतोष कर लेने के लिए कुछ काम भले ही आ जाए, पर दूसरा कोई भी विचारशील इससे संतुष्ट नहीं होगा। न्याय यही कहता है कि कोई साधु जबकि अपने निज के लिए ऋद्धि-सिद्धि, चमत्कार, स्वर्ग, मुक्ति चाह रहा है और इसी के लिए जप-तप भी कर रहा है तो फिर अपने श्रम द्वारा उपार्जित धन से ही उसे गुजारा भी करना चाहिए। औरों की पसीने की कमाई के आधार पर अपने लिए सुख-साधन जुटाना यह अनैतिक है। स्वर्ग या ताजमहल होटल में मौज-मजा करने जाना है तो प्रसन्नतापूर्वक जाएँ, पर उसके लिए दूसरों पर अपना भार क्यों डाला जाए?

यह बात कुछ और ही है, माया, मिथ्या, भवसागर आदि बातें तो कहने भर की हैं। वे तथाकथित साधु सज्जन भी यह सब जानते हैं। यदि ऐसा होता तो स्वादिष्ट और अस्वादिष्ट भोजन में, सुविधा और असुविधा में, मान और अपमान में ,स्तुति और निंदा में उन्हें कोई अंतर ही न दीखता, पर होता ऐसा कहाँ है ? साधारण लोगों की तरह संसार में जो प्रिय है, सुंदर है उसी में उनकी भी रुचि होती है। विलासिता के लिए वे भी औरों की तरह ही लालायित रहते हैं। मिथ्यावाद, मायावाद का बहाना तो इसलिए है कि उन्हें कुछ काम करने के लिए न कहें। आमतौर से आलसी, अकर्मण्य और जीवन के हर क्षेत्र में असफल व्यक्ति ही यह रास्ता अपनाते हैं। उन्हें बिना कमाई के गुजर और बिना झंझट के दिन काटने का इससे सस्ता और कोई तरीका नहीं दीखता कि दो पैसे के गेरुआ कपड़े रंगते ही महात्मा बन जाया जाए और इधर-उधर की बातें करके अपनी सिद्धि या भक्ति का रंग जमाकर भोले लोगों से धन ही नहीं मान भी प्राप्त किया जाए। जब अपना प्रयोजन पूर्ण हो गया तो फिर झंझट में पड़ने से क्या लाभ? किसी आदर्श के लिए तो वे साधु बने नहीं थे, जो सेवा धर्म अपनाने या नर-नारायण को श्रम सिंचित श्रद्धांजलि अर्पित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने की बात सोचते। जब गुजारे के लिए श्रम करना ही झंझट समझ कर छोड़ दिया गया तो फिर 'सेवा' कार्य जिसमें श्रम की मजदूरी भी नहीं मिलने वाली है, अपनाकर एक व्यर्थ का झंझट, सिर दरद क्यों मोल लिया जाए? ऐसे लोगों को कोई कुछ कहता भी है तो वे उसे अपना अपमान समझते हैं। बाबा हुए हैं तो क्या सेवा करने के लिए? यह वेष तो उन्होंने सेवा कराने और मुफ्त की सुविधाएँ लूटने के लिए पहना है। यदि श्रम ही कराना होता तो इस वेष को क्यों अपनाते? फिर तो कोई दूसरा ही उद्योग कर रहे होते।

समय रहते बदलें—जिनका स्तर इतना गया-गुजरा हो उससे किसी आदर्शवाद को अपनाने की बात कहना व्यर्थ है। फिर जिनका व्यक्तित्व, शिक्षा, ज्ञान, विचार, संस्कार थोड़ा ऊँचा उठा हुआ न हो, वे लोगों की कुछ सेवा कर भी नहीं सकते। सेवा तो वे कर सकते हैं जिनके पास कुछ देने को हो, जिनकी जेब खुद ही खाली है वे किसी को देंगे भी कहाँ से? इन महाशयों से तो इतना ही कहना है कि अब इस धंधे की समाप्ति के दिन आ पहुँचे। मुफ्तखोरी का व्यवसाय अब लाल-पीले कपड़ों की आड़ में भी चल न सकेगा। दुनियाँ का विवेक जाग्रत हो रहा है। क्यों, कैसे का प्रश्न तेजी से उठ रहा है। हर बात को खोजा-टटोला जा रहा है। ऐसी दशा में अब साधु-संतों की उपयोगिता-अनुपयोगिता जाँची जाएगी और अनुपयोगी को हटना ही पड़ेगा। इसलिए अच्छा यही है कि समय रहते, सम्मानपूर्वक अपने लिए दूसरा प्रबंधकर लिया जाए। उन्हें यह भविष्यवाणी नोट कर लेनी चाहिए कि अगले दस वर्षों में इस तरह गुजर करना किसी के लिए भी संभव न रहेगा। माला की आड़ में भी उनका वर्तमान क्रम जारी न रह सकेगा। ऐसी दशा में बुद्धिमत्ता इसी में है कि जिन्हें दस वर्ष से अधिक जीने की आशा हो वे अपने लिए गुजारे का कोई दूसरा उपाय ढूँढ़ निकाले। भजन करना हो, करें, वह तो अपनी कमाई पर निर्भर रहते हुए भी हो सकता है। अब जनता में मुफ्तखोरी के प्रति क्षोभ उत्पन्न हो रहा है। अगले दिनों यह रोष के रूप में परिणत होगा और फिर अंततः वह विद्रोह के रूप में बदल जाएगा। उसके सामने टिक सकना तब असंभव ही हो जाएगा। इसलिए समय बदलने के साथ-साथ अपने को बदल लेने में ही बुद्धिमानी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म निरीक्षण और आत्म-चिंतन की घड़ी—जिनमें विचार और विवेक मौजूद है, जो किन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर महात्मा बने हैं, जिनमें व्यक्तित्व एवं भावना विद्यमान है, यह पंक्तियाँ उन्हीं के लिए लिखी जा रही हैं और अनुरोध किया जा रहा है कि वे एक बार आदि से अंत तक अपनी स्थिति पर विचार करें। जिन विचारों से प्रेरित होकर उनने घर-द्वार छोड़ा है, संन्यास लिया है, उनकी निष्पक्ष समीक्षा करें और नये सिरे से यह सोचें कि उन्हें प्रस्तुत विचारधारा एवं कार्य-पद्धति में कोई परिवर्तन करना अभीष्ट है या नहीं। शांत चित्त, निष्पक्ष-भाव और निर्मल विवेक को साथ रखकर यदि प्रस्तुत समस्या पर विचार किया जाएगा तो निश्चित रूप से एक ही निष्कर्ष निकलेगा कि जो साधु हैं, उन्हें अपना समय दो-पाँच माला अन्यमनस्क मन से घुमा लेने मात्र में ही अपना बहुमूल्य जीवन बरबाद नहीं करना चाहिए। वेश देखकर लोग कुछ कहें, बात दूसरी है, पर अपनी अंतरात्मा तो कहेगी ही। मानव-जाति को, धर्म और संस्कृति को जिस दुर्दशाग्रस्त परिस्थितियों में होकर इन दिनों गुजरना पड़ रहा है, उनमें साधु-ब्राह्मण का वही कर्त्तव्य है, जो आगे चलने पर उसके समीप उपस्थित समर्थ व्यक्तियों का। आज की वर्तमान विषमताओं को दूर करने और नव-निर्माण की उदीयमान प्रवृत्तियों को बढ़ाने के लिए एक साधु का योग सबसे अधिक हो सकता है। भारतीय धर्म-भावनाओं के अनुरूप साधु का सम्मान स्वभावत: समाज में अधिक होता है। ऋषि परंपरा में उसे यही विरासत मिली है। लोक श्रद्धा मनुष्य के पास एक बहुत बड़ी शक्ति है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक दायित्वों से मुक्त होना, गुजारे की समस्या से निश्चिंत होना, मनुष्य जीवन का एक अनुपम सुअवसर है। यह अवसर हजारों-लाखों में से किसी एक को मिलता है अन्यथा सर्वसाधारण का तो सारे का सारा श्रम और मनोयोग पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं के सुलझाने में ही लग जाता है। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए अंतरात्मा निरंतर छटपटाती रहती है, पर विवशता के बंधन उन्हें करने कुछ नहीं देते। जिन्हें ऐसी विवशता नहीं, उन्हें ईश्वर का अनुपम वरदान मिला यही कहना चाहिए। यह सुअवसर नर-नारायण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की सक्रिय पूजा-उपासना में ही लगाया जाना चाहिए। मानवीय सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन में लगाया गया श्रम, समय एवं मनोयोग इतना बडा तप है जिसकी तुलना और किसी पुण्य से नहीं की जा सकती। अपनी प्रेरणा से जिसका जितने अंशों में परिष्कार हुआ उसमें उतना ही श्रेय है। सत्प्रेरणा पाकर जिन लोगों ने जो सत्कर्म किए हैं, उनका पुण्य करने वाले को मिलता ही है, साथ ही वह प्रेरणा देने वाला भी पुण्य-फल का भागी होता रहता है। शास्त्र में प्रेरणा देने वाले को दशवाँ अंश पुण्य मिलने की बात लिखी हुई है। यदि अपनी प्रेरणा से १०० व्यक्ति सन्मार्ग-गामी हुए तो दस व्यक्तियों के सुकृतों जितना पुण्य अपने को भी मिलेगा। लाभ की दृष्टि से भी यह बहुत उत्तम उपाय है।

यदि ऐसा न भी सोचें तो भी जिस देश, धर्म, जाति, समाज में अपना जन्म हुआ है; उसकी सेवा करना, उसे अधिक समुन्नत, सुखी, परिष्कृत एवं व्यवस्थित बनाने के लिए प्रयत्न करना मनुष्य का पवित्र कर्त्तव्य है। फिर संत-महात्मा, जिनने अपना जीवन ही ईश्वर को अर्पित कर दिया, उनके लिए तो यह सब अनिवार्य रूप से आवश्यक है। ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि सेवा-कार्यों में लग जाने से ईश्वर भजन को समय न मिलेगा और ऋद्धि-सिद्धि या स्वर्ग मुक्ति प्राप्त करने का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। यह मान्यता सही नहीं है कि ईश्वर भजन करने से ही प्रसन्न होता है और सिद्धियाँ योग-साधना का ही फल हैं। हमें जानना चाहिए कि सेवा ईश्वर की प्रत्यक्ष उपासना है और इस तपश्चर्या का चमत्कार किसी भी हठयोग, तंत्रयोग, कुंडलिनी योग आदि से रत्ती भर भी कम नहीं है। महात्मा गाँधी की तपस्या लोक-सेवा थी, पर उसके चमत्कार कितने अभूतपूर्व थे, जिन्हें देखकर दंग रह जाना पड़ता है। हमने स्वयं अपने जीवन का दो-तिहाई भाग सेवा-कार्यों में लगाया है और यह पाया है कि उसका परिणाम उससे कहीं आश्चर्यजनक है जितना कि मंत्र-तंत्र द्वारा संभव है। हमने वैसी उपासनाएँ भी की हैं। तुलनात्मक दृष्टि से यह परीक्षण भी किया कि दोनों में से कौन-सा माध्यम भारी पड़ा, तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ा कि तंत्र-मंत्र की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संलग्नता से भी कई गुनी आध्यात्मिक प्रगति एवं उसकी विभूति-अनुभूति सेवा-धर्म को अपनाने में होती है। निश्चित रूप से सेवा-धर्म एक उत्कृष्ट कोटि की तप-साधना एवं तपश्चर्या है और इसे अपनाने वाले को वह सभी सत्परिणाम मिल जाते हैं जो आध्यात्मिक साधनाओं द्वारा संभव हैं। लोकमंगल से दूसरों को जो लाभ मिलता है, अपनी आत्मा में जो शांति आती है, वह लाभ तो अतिरिक्त ही है। इसलिए संसार से कुछ मतलब रखना ही-केवल अपना ही भला करना हो, उसके लिए भी यही उचित है कि सेवा-धर्म अपनाने और मानव अंत:करण को उत्कृष्ट बनाने के लिए जो भी उपाय संभव हों उनमें प्राण-प्रण से जुट जाया जाए। साधु-ब्राह्मण सेवा कार्यों को भगवान की पूजा मानकर करने लगें तो देश में चमत्कारी परिणाम सामने आने लगें। उनकी विशाल संख्या जिस काम को हाथ में ले, उसी को चरम सीमा तक पहुँचा सकती है। जन श्रद्धा के कारण सहयोग की कमी भी नहीं रहेगी।

देश में गंदगी एक अहं समस्या है। हर गाँव को ईश्वर का मंदिर मानकर यदि उसे साफ-सुथरा बनाने, लोगों को सफाई का महत्त्व समझाने तथा उसके ढंग सिखाने पर थोड़ा ध्यान दिया जाए तो फिर गाँवों के दृश्य देखते ही बनें। जन-स्वास्थ्य बराबर गिरता जा रहा है। साधु-संन्यासी स्वास्थ्य संवर्द्धन के कार्य को उठा लें, तो देशवासियों का गिरता हुआ स्वास्थ्य औसत सहज ही संभल सकता है। प्राकृतिक रहन-सहन तथा व्यायाम आदि का क्रम चलाया जाना भर चमत्कारी परिणाम उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार चिकित्सा, गौ-संवर्द्धन सामूहिक प्रवृत्तियाँ आदि अनेक कार्य बढ़ाए जा सकते हैं।

शिक्षा समस्या—देश में सबसे प्रधान समस्या शिक्षा की है। ज्ञान संवर्द्धन से जीवन के हर पक्ष में प्रगति की जा सकती है, किंतु दुर्भाग्य यह है कि अभी भी ७० प्रतिशत से अधिक जनता निरक्षर पड़ी है, निरक्षरता मानव-जीवन का बहुत बड़ा अभिशाप है। इस युग में मनुष्य की व्यक्तिगत एवं सामाजिक उलझनें एवं आवश्यकताएँ इतनी अधिक बढ़ गई हैं कि उनके हल करने में शिक्षा की सहायता आवश्यक है। बिना पढ़े व्यक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की भौतिक एवं आंतरिक प्रगति रुकी पड़ी रहती है। अपने आस-पास के वातावरण में जो कुछ सीख लिया गया है, उतना ही उलटा-सीधा वह समझ पाता है। संसार में अन्यत्र किस प्रकार सोचा और किस प्रकार किया जा रहा है, किस प्रकार किया गया है, इसका उन्हें पता ही नहीं चल पाता, इस प्रकार के कूप-मंडूप बने, आँख रहते हुए भी अंधे की स्थिति में पड़े रहते हैं। इस दुर्दशा से भारतीय जनता को निकालना ही चाहिए। अविद्या भी एक नरक है। इससे किन्हीं प्राणियों का उद्धार करना सचमुच बहुत बड़ा पुण्य कार्य है। संसार के सभी सभ्य देशों में अल्पायु बालकों को छोड़कर शेष सभी बोधवान व्यक्ति शत-प्रतिशत शिक्षित होते हैं। निरक्षरता को वहाँ मानव-जीवन का कलंक माना है। इसलिए एक भी नागरिक इसे स्वीकार नहीं करता।

कहाँ संसार भर में शिक्षा के लिए यह प्रेम और उत्साह कि अंधे, गूँगे, बहरे तक ग्रेजुएट बनें, भटियारे, धोबी और महतर तक अपना धंधा करते हुए रात्रि विद्यालयों की सहायता से उच्च-शिक्षा प्राप्त करें, कहाँ हमारा देश जहाँ खाते-पीते लोग भी पढ़ने की आवश्यकता अनुभव नहीं करते। अभी तक देश में यह नहीं समझा जा सका है कि विद्या की भी कोई आवश्यकता है ? क्या इसे समझना और शिक्षा में रुचि उत्पन्न कराना आज की स्थिति में संत, महात्माओं का पवित्र कर्त्तव्य नहीं है ? गाँव-गाँव जाकर वे लोगों को यह समझावें कि वे अपने बच्चों को सुशिक्षित बनाने का कर्त्तव्य पालन करें। लड़कों को ही नहीं लड़कियों को भी पढ़ावें। जहाँ सरकारी स्कूल हैं वहाँ उनमें बच्चों को भेजें, जहाँ नहीं हैं, वहाँ चंदा पद्धति से अध्यापक नियुक्त करके पढ़ाई आरंभ करावें। जहाँ स्कूलों की इमारतें नहीं है, वहाँ बनवावें। जिस प्रकार पिछले दिनों मंदिर, कुआँ, तालाब, धर्मशाला बनवाना लोग पुण्य कार्य समझते थे, अब स्कूलों का बनवाना उससे भी बड़ा पुण्य कार्य माना जाना चाहिए। संत-महात्मा जिस प्रकार चंदा करके मंदिर बनवाते, भंडारा या यज्ञ करते कराते हैं, उसी प्रकार अब उन्हें स्कूलों की व्यवस्था करने, स्कूलों के लिए इमारतें बनवाने का काम अपने हाथ में लेना चाहिए। इसी प्रकार नारी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा पढ़े-लिखों को स्वाध्याय की सुविधा उपलब्ध कराना किए जाने योग्य कार्य हैं। संत महात्मा इसके लिए कटिबद्ध हों और जैसे इतने यज्ञ, इतनी कथा-भागवत, इतना ब्रह्मभोज आदि कराने की प्रतिज्ञा पहले बाबाजी किया करते थे, उसी प्रकार अब इतने स्कूल खुलवाने, उनकी इमारतें, बनवाने, घर-घर जाकर बच्चों को स्कूल भेजने के लिए अभिभावकों को तैयार करने जैसे कार्यों की संख्या निर्धारित करके संकल्प करें तो उसे उस तरह का परमार्थ व्रत उनकी साधुता को सार्थक बना सकता है।

ज्ञान के दो अंग विकसित करें—ज्ञान के दो अंग हैं—एक शिक्षा, दूसरा विद्या। शिक्षा वह जो पढ़ने-लिखने की क्षमता प्रदान करती है। विद्या वह जो विवेक के नेत्र खोलती है, सद्विचार, सद्भाव एवं सत्संस्कारों को जगाती है। स्कूल शिक्षा के माध्यम हैं तो पुस्तकालय विद्या के। दोनों संस्थाएँ जहाँ होंगी वहाँ कहा जाएगा कि महाभगवती सरस्वती की, माता गायत्री की दोनों भुजाएँ समान रूप से काम कर रही हैं। लोक-कल्याण की दृष्टि से यह दोनों आयोजन जितने महत्त्वपूर्ण हैं उनकी तुलना में श्रेष्ठ कार्य और कोई सूझ नहीं पड़ता। भारत में गाँवों की संख्या लगभग ५६७१६९ और शहरों की संख्या लगभग २६९० है। कुल मिलाकर छः लाख से भी कम है। नई गणना के अनुसार भारत में धर्मजीवी साधु-ब्राह्मणों की संख्या ८० लाख से अधिक है। उनमें से अपंग भिखारी घटा दिए जाएँ तो भी ६० लाख से अधिक व्यक्ति मिल सकते हैं। यदि वे सभी शिक्षा एवं विद्या प्रसार के इन आरंभिक प्रयोजनों को हाथ में लेते तो हर गाँव के पीछे करीब १० साधु-ब्राह्मण आते हैं। वे देखते-देखते राष्ट्र की इस महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को स्वयं ही बिना किसी के सहारे पूरा कर सकते हैं।

यदि सब साधु-ब्राह्मण इसके लिए तैयार न हों और एक लाख भी ऐसे कर्मठ निकल आवें तो एक साधु छः ग्रामीणों को आसानी से संभाल सकता है। एक छोटा ७ गाँवों का सेवा मंडल बनाकर बैठा जाए। सात दिनों में से एक-एक दिन एक-एक गाँव के लिए नियत कर लें। हर सप्ताह प्रेरणा देने के लिए पहुँच जाया करें, भजन-कीर्तन, कथा, रामायण,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूजा, हवन की आंशिक शिक्षा एवं विद्या की महत्ता समझाने एवं उनके व्यवस्था क्रम को अग्रगामी बनाने का प्रयत्न किया करें तो कुछ ही दिनों में आशाजनक चमत्कारी परिणाम हो सकते हैं। इन प्रयत्नों से साधुता धन्य हो सकती है। एक लाख साधु, ब्राह्मण भी यदि सच्चे हों तो ८० लाख के सिर पर लगे हुए कलंक को धोकर स्वच्छ कर सकते हैं।

आज प्रत्येक दिशा में अंधकार छाया हुआ है। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक प्रत्येक क्षेत्र में हम पिछड़े हुए हैं, हर दिशा में बहुत कुछ करना शेष है। सच्चे लोक-सेवियों का अभाव है, सर्वत्र अंधेरा छाया हुआ है, उज्ज्वल व्यक्तियों के अभाव से सदियों से गले में बँधा हुआ पिछड़ापन हटाए नहीं हट पा रहा है। उसके लिए ऐसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की नितांत आवश्यकता है जो अपने-अपने परिवार की चिंताओं से मुक्त रह कर अहर्निश लोक-सेवा में संलग्न रह सकें। यह कार्य साधु-संत जितनी अच्छी तरह कर सकते हैं, उतना कोई नहीं कर सकता । भारतमाता को ऐसे ही संतों की आज आवश्यकता है। प्रत्येक सच्चे साधु या ब्राह्मण को, विश्व मानव की सेवा के लिए अपने आपको तत्पर करना चाहिए तभी हमारी सधु परंपरा का गौरव, महत्त्व एवं उपयोग अक्षुण रह सकेगा।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org